मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2018-20 /R.N.I. No. 66400/97

वेबसाइट से कोरोना कंट्रोल कर रहा फरीदाबाद	3
भाजपाई-कांग्रेसी अपने घरों में क्यों नहीं बनाते कोविड सेंटर	4
कोविड हेल्थ सेंटर के नाम पर धंधा	5
योगी की एनकाउंटर नीति से किनारा करने का समय	6
श्रीराम अस्पताल में शुरू नहीं हो सका कोविड सेंटर	8

वर्ष 34 | अंक 28 | फरीदाबाद | 23 मई-29 मई 2021 | फोन-8851091460 | ₹3.00

802 ऑक्सीजन, 633 नॉन ऑक्सीजन बेड, 167 आईसीयू और 60 वेंटिलेटर खाली

...तो फिर मजदूरों से छीना गया ईएसआई अस्पताल वापस करे हरियाणा सरकार

फरीदाबाद (म.मो.) प्रशासन द्वारा मीडिया में प्रकाशित कराये गये खाली बेड और वेंटिलेटर के आंकड़े यदि सही हैं तो यह बहुत खुशी की बात है। इससे एक तो यह लगता है कि प्रशासन ने कोरोना पर काफी हद तक विजय पा ली है अथवा यूं कहें कि स्वास्थ्य सेवाओं में यकायक भारी वृद्धि करके सरकार ने भारी उपलब्धि प्राप्त की है।

यदि यह सब सही है और प्रशासन द्वारा दिये गये ये आंकड़े गलत नहीं है तो गरीब मजदूरों के ईएसआई मेडिकल अस्पताल पर प्रशासन क्यों काबिज है? विदित है कि एनएच-3 स्थित इस मेडिकल कॉलेज अस्पताल में प्रतिदिन करीब 4000 मरीज ओपीडी में आते थे जिन्हें एक झटके में अस्पताल आने से रोक दिया गया, बिना कोई विकल्प दिये, कहने को जो विकल्प दिया गया, सैक्टर-8 का ईएसआई अस्पताल उसकी दुर्दशा का वर्णन गतांकों में किया जा चुका है कि वह अस्पताल तो खुद बीमार है। वहां न तो डाक्टर व अन्य स्टाफ है न पर्याप्त दवायें व उपकरण। रही सही कसर खट्टर सरकार ने यहां के स्टाफ को हिसार व पानीपत भेजकर कर दी है। जाहिर है ऐसे में गरीब मजदूरों के पास झोलाछाप डाक्टरों के हाथों लुटने एवं मरने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता।

दरअसल प्रशासन द्वारा प्रचारित आंकड़ों में मोठूका स्थित अटल बिहारी मेडिकल कॉलेज सेक्टर 14 स्थित रेडक्रॉस के नशा मुक्ति केन्द्र, अभी हाल फिलहाल उद्घाटित सनफ्लैग अस्पताल व मेट्रो आदि के बेड दिखाये गये हैं। मेट्रो जैसे हाई-फाई अस्पताल में तो आम आदमी का घुस पाना दूभर है और शेष बाकी अस्पतालों की विश्वसनीयता संदिग्ध है। पुख्ता जानकारी के अनुसार अटल बिहारी

मेडिकल कॉलेज, जिसे खट्टर ने दो दिन में चालू करने की घोषणा की थी, वहां अभी तक 15 मरीज भर्ती हुए, जिसमें एक की मृत्यु हो गयी और कुछ डिस्चार्ज हो गये एवं कुछ भाग गये और 4 मरीज मौजूद है। विदित है कि वहां कोई भी मरीज सीधे नहीं जा सकता, केवल वही हल्का-फुल्का मरीज, बीके अस्पताल द्वारा भेजा जाता है जिसे बिना किसी विशेषज्ञ इलाज के वहां लिटाकर रखा जाये। रही बात सनफ्लैग की तो उसके लिए सरकार के पास तो कुछ है नहीं, ऐसे में इसे किसी बड़े चिकित्सा व्यापारी को ही सौंपा जाना तय है।

कुल मिलाकर यदि प्रशासन अपने घोषित आंकड़ों को सत्य सिद्ध करना चाहता है तो उसे तुरन्त ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल मजदूरों को वापिस उपलब्ध करा देना चाहिए।

मेडिकल कॉलेज की आईसीयू का हॉल

ईएसआई के मेडिकल कॉलेज अस्पताल में इस वक्त आईसीयू के 80 बेड तो पक्के तौर पर चालू हैं जरूरत पड़ने पर जुगाड़बाजी करके पांच-सात और मरीजों को भी यह सुविधा प्रदान की जाती है। लेकिन यहां भी दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि इन 80 बेड के लिए स्टाफ की भारी कमी है। जैसा कि आईसीयू नाम से जाहिर होता है मरीज की कड़ी निगरानी यानी हर पल मरीज पर निगरानी। इसके लिए यहां केवल 44 नर्स, 18 नर्सिंग अर्दली, 22 इन्टर्न (नौसिखये डॉक्टर) उपकरणों की देखभाल के लिए मात्र तीन तकनीशियन 15 जूनियर रेजिडेंट व 9 सीनियर रेजिडेंट, इन सबके ऊपर 3एपी (सहायक प्रोफेसर डॉक्टर)।

जानने वाली बात यह भी है कि यहा आईसीयू के सारे बेड एक ही जगह न होकर 3 जगहों पर हैं, कुछ भूतल पर तो कुछ तीसरी मंजिल पर। जब मरीज पर हर पल नजर रखनी है और जरूरत पड़ने पर डॉक्टर भी चाहिए तो पूरे स्टाफ को 3 शिफ्टों में बांटने के अलावा एक चौथा ग्रुप भी चाहिए जो छुट्टी आदि जाने वालों की जगह ले सके। कोविड के मामले में तो और भी बड़ी दिक्कत पीपी किट पहनकर आठ घंटे की डयूटी नहीं बल्कि छह घंटे की ही होती है। सुधी पाठक समझ गये होंगे कि यह स्टाफ जरूरत का आधा भी नही है। ऐसे में पूरी तरह शोषित होने के बावजूद यह स्टाफ मरीज की कितनी देखभाल कर पाता होगा?

बीके अस्पताल की स्थिति

संदर्भवश सुधी पाठक जिले के इस सबसे बड़े अस्पताल की स्थिति भी जान लें। यहां 160 नर्सों की जरूरत के विपरीत मात्र 90 पद ही स्वीकृत हैं और उनमें से भी 75 रिक्त पड़े हैं। लगभग यही स्थिति डॉक्टरों व अन्य स्टाफ की है। जिले भर में स्थित तमाम छोटे-बड़े स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थिति तो इससे भी बदतर है। ऐसा नहीं कि यह दुर्दशा केवल इसी जिले की है, राज्य भर में यही हाल है।

समझने वाली बात यह है कि आपात स्थिति की बात तो छोड़िये साधारण स्थिति के लिए भी चिकित्सा सेवायें नदारद हैं। कोविड जैसी आपात स्थिति में राजनेता प्रोपेगंडा व उद्घाटनों का सिलसिला शुरू कर देते हैं और अस्पताल चलाने के लिए फौज का मुंह ताकने लगते हैं। इस सबके बावजूद नये पद सृजित करना तो दूर रिक्त पदों को भरने तक की कोई बात सरकार नहीं कर रही है।

खट्टर को खदेड़ा हिसार वालों ने, मिर्ची लगी फरीदाबाद भाजपा को

फरीदाबाद (म.मो.) बीते रविवार यानी 16 मई को हिसार वासियों ने खट्टर को इतनी बुरी तरह खदेड़ा कि 50 से अधिक प्रदर्शनकारी व बीसियों पुलिसककर्मी घायल हो गये। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप चापलूसी का फर्ज निभाते हुए स्थानीय जिला भाजपा अध्यक्ष गोपाल शर्मा ने मीडिया में बयान छपवाया कि हिसार वालों ने अस्पताल खोले जाने का विरोध किया। यानी वे नहीं चाहते कि खट्टर सरकार उनके लिये महामारी से लड़ने के लिए अस्पताल खोले।

शेष पेज दो पर

सारा जीवन अजनबियत से लड़े वर्मा जी

17 मई की सुबह उठा तो एक-एक लाइन के तीन सन्देश सामने थे। आशु ने देहरादून अस्पताल से लिखा था कि पापा नहीं रहे। बाकी दो इलाहाबाद से कवि-समाजकर्मी अंशु मालवीय और हाई कोर्ट के वकील राकेश गुप्ता के थे। वर्मा जी के तमाम प्रशंसकों की तरह वे दोनों 5 मई से कोरोना अस्पताल में दाखिल अपने गुरु-दोस्त के स्वास्थ्य पर नजर लगाए हुए थे। 1998-99 में वर्मा जी फरीदाबाद में रहे थे। सन 2000 से हमने 'साहित्य से दोस्ती' मुहिम शुरू की थी और इस क्रम में हरियाणा के कई शहरों में उनके प्रशंसकों की लम्बी फेहरिस्त है। उस दिन कइयों ने मुझे फोन या मेसेज किया।

उसी शाम दिल्ली से राजेश उपाध्याय ने जूम पर स्मृति सभा का आयोजन कर दिया। खचाखच भरी आभासी सभा में वर्मा जी के 4-5 पीढ़ियों के प्रशंसक इकठ्ठा हुए। उनमें से अधिकाँश को मैं वर्मा जी के माध्यम से ही जानता था और बहुतों का हालचाल वर्मा जी से मुलाकातों में मिलता रहता था। कोई 70 के दशक का, कुछ 80 और नब्बे के दशक के, और यहां तक कि 21वीं शताब्दी, जब वे विश्वविद्यालयों से फारिग हो चुके थे, उसके हर दौर से जुड़े लोग। एकबारगी मुझे लगा कि अजनबियत (एलियनेशन) के दौर में भी वर्मा जी के व्यक्तित्व से हम सभी एक चुम्बक की तरह जुड़े हुए थे।

यह कहना शायद अतिशयोक्ति न होगी कि इतिहासकार शिक्षक लाल बहादुर वर्मा से जो भी मिला वह उन्हीं का होकर रह गया। मैं स्वयं 45 वर्षों का भुक्तभोगी हूँ। 1975 -77 में मैंने गोरखपुर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में एमए में दाखिला लिया और यूरोपियन हिस्ट्री पढ़ाने में चमत्कृत कर देने वाले इस अध्यापक के

प्रशंसकों/दोस्तों की अंतरंग कवियों में हमेशा के लिए शामिल हो गया।

वे मार्क्सवादी थे और कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो के जनक कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स की आदर्श मित्र जोड़ी के एक स्वघोषित पैरवीकार। मार्क्स ने पूंजीवाद में मनुष्य के बढ़ते एलियनेशन को मानव समाज के लिए सबसे बड़े खतरों में शुमार किया था। वर्मा जी का जीवनपर्यन्त एलियनेशन से ही लड़ने का एजेंडा रहा। जीवन का अंतिम दशक तो उन्होंने 'दोस्ती' की अवधारणा को मानव मुक्ति की पूर्व शर्त के रूप में स्थापित करना अपना मुख्य लक्ष्य बना लिया था।

अपने तमाम लेफ्ट एक्टिविज्म के बावजूद, वे न किसी राजनीतिक खांचे में फिट बैठाये जा सकते थे और न एक सामाजिक आन्दोलनकारी की छवि में। वे लगातार एक प्रखर संस्कृतिकर्मी बने रहे जिनके मुंह से आपको प्राय: यह वाक्य सुनने को मिल जाता था कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी ही नहीं, सांस्कृतिक प्राणी भी है। सभी को उनकी चुनौती रहती थी, मनुष्य पहले इंसान बनेगा तभी कुछ और।

उनके सानिध्य में सैकड़ों छोटे-बड़े आयोजनों में भागीदारी मैंने की होगी। दो बार पूर्वांचल/अवध में और दो बार उत्तराखंड में हफ्तों तक हमने एक साथ किताब यात्राएं कीं। गोरखपुर में रामदत्तपुर के उनके पुराने/नए घर से इलाहबाद मेंहदौरी कालोनी के निवास और अंतत: देहरादून में उनके प्रवास तक अनगिनत बैठकों का सिलसिला अब थम गया है। मैं स्वयं अपनी नौकरी में दर्जनों जगह रहा और वे सभी निवासों में बार-बार आये। उनके साथ हर मुलाकात, हर बैठकी, विचार और अनुभव का जीवंत प्रवाह होती थी। आखिरी बार इसी मार्च में फरीदाबाद में, जहां दिल्ली की गाजीपुर सीमा पर किसान आंदोलन से साक्षात्कार करते हुए पहुंचे।

उनके शरीर को देखकर सहज कहा जा सकता था कि वे खाने के शौकीन थे। इसलिए पकाने के भी। संगीत और साहित्य तो उनकी रग-रग में था। रंगकर्म उनका शुरू से जुनून था। किसी के लिए भी उनसे मिलना इतिहास बोध के अजस्र स्रोत से मिलना होता था। उनका अंतिम वीडियो पंकज श्रीवास्तव की मीडिया विजिल के लिए 'हिस्ट्री क्लिनिक' का सिलसिला प्रारंभ कर गया।

वर्मा जी महामानव नहीं थे कि वे जिधर चलते उनके साथी और प्रशंसक उधर चल पड़ते। सच तो यह है कि उनके चाहने वालों में कइयों से उनके गंभीर मतभेद रहे। लेकिन वे सभी के साथ चल सकते थे, इस कदर धैर्य था उनमें। उन्होंने न सिर्फ अपने हर संपर्क को कुछ न कुछ अर्थपूर्ण दिया होगा बल्कि उससे कुछ न कुछ लिया भी होगा। न सिर्फ वे हम सब में जीवित हैं बल्कि हम सब को भी जी कर गए हैं।

जून 2019 में फरीदाबाद में आयोजित दोस्ती कार्यशाला में लाल बहादुर वर्मा

-विकास नारायण राय